भागवत कथा - 8

रजनी यादव (B.com.)

यह एक और सत्य–असत्य के बीच हुए धर्मयुद्ध की दास्ताँ है। महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले की रहने वाली 20 साल की रजनी यादव भी ऐसी कन्याओं में से एक है, जो ज्ञान-मुरलियों और अव्यक्त-वाणियों के आधार पर अपने-आप को ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने के दृढ़ संकल्प को लेकर फ़र्रुखाबाद के आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की ओर दौड़ पड़ी और दिनांक 14-12-2009 को ईश्वरीय यज्ञ में समर्पित भी हो गई।

फिर कहानी तो हमेशा की तरह वही रही; रजनी के माता-पिता वीर सिंह यादव और विमला देवी रजनी की ग्रेजुएशन पूरी होने के बाद उसकी शादी कराना चाहते थे। उसके माता-पिता उसकी शादी कराने के लिए अड़े रहे और वह अड़ी रही अपनी पवित्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए। रजनी की अपने मात-पिता को मनाने की सारी कोशिशें नाकाम हुईं। अब बची एक ही राह, वही- 'भागवत'। एक आशा की किरण रहा उसका भाई, जिसने इस भागवत में उसका पूरा साथ दिया।

Bhagawat Story-8

Rajani Yadav:

This is another battlefront on the side of the only one Truth; a battle of the Truth with the lie.

Rajani Yadav aged 20 years from district Raighad of Maharashtra one of such girls who have with firm determinations decided to surrender themselves for Godly Service on the basis and directions of Muralies as well the indications in Avyakta Vanis which have influenced them to resort to escapade towards Farrukhabad. Rajani Yadav surrendered herself for the cause of Godly Service on 14th December, 2009. Again the same story; the same history in repetition. Her father Veer Singh Yadav and her mother Vimala Devi decided to get her married immediately after her graduation. They stood firm to get her married and Rajani stood on the battlefront with her firm decision to maintain purity lifelong. All the attempts of Rajani proved futile to convince her parents. Now remains the only one way. Escapade (The Bhagawat) . There remained only one ray of hope; that is her brother who joined hands with her.

वह भी ज्ञान के आधार पर आध्यात्मिक विश्वविद्यालय से जुड़ना चाहता था और 7 दिन की ज्ञान-योग की भट्ठी भी करना चाहता था। दोनों भाई-बहन ने फ़र्रुखाबाद जाने के लिए अपनी टिकिट्स भी बनाए थे; परंतु बहन मात-पिता के पकड़ में आ गई और भाई फ़र्रुखाबाद के लिए रवाना हो गया। लेकिन

कुछ ही दिन बाद मौका देखकर रजनी अपने भाई के सहयोग से ता.11-12-2009 को घर छोड़ फ़र्रुखाबाद चली गई।

Her brother was also much inclined towards joining with Adhyatmik Vishwa Vidyalaya. He wanted to attend for Bhatti, a seven day course of spiritual enlightenment with specific restrictions in pure atmosphere. Both the brother and sister planned to escape towards Farrukhabad; also got their tickets reserved secretly; but alas! the sister was caught hold of by their parents and the brother could however skip for Bhatti in Farrukhabad. At last, she could find way out to escape and she could leave the house with the help of her brother on 11-12-2009.

दिनांक 11-12-2009 को ही रजनी ने अपनी स्वेच्छा से आध्यात्मिक विश्वविद्यालय परिवार के साथ जुड़ने की बात को फ़र्रुखाबाद और रायगढ़ के पुलिस अधीक्षकों को स्पीड पोस्ट द्वारा सूचित कर दी तथा अपने माता-पिता और रिश्तेदारों से रक्षण के लिए उनके सामने अपनी विनती भी रखी। फिर भी उसके माता-पिता बार-2 आध्यात्मिक विद्यालय में आकर उसे शादी कराने हेतु घर वापस ले जाने का प्रयास करते रहे, धमकियाँ देते रहे और दबाव डालते रहे। उनका व्यवहार ऐसी स्थिति तक पहुँच गया कि न चाहते हुए भी रजनी के सामने अपने मात-पिता के विरुद्ध महिला घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 की धारा 18 के अंतर्गत मात-पिता को घरेलू हिंसा करने से रोकने और उसके निवास स्थान पर आने से व किसी भी तरीके से संवाद करने पर रोक लगाने का आदेश माँगते हुए, दिल्ली के रोहिणी कोर्ट में केस फाइल करने की नौबत आ गई।

It was on 11th December, 2009, she has advised the fact of her joining the "AVV family" to the S.Ps of Raighad as well Farrukhabad, thereby requesting them to provide Police protection from her parents and relatives. Still, her parents started to frequently visit Farrukhabad "AVV" and harass their daughter with pressures and threats in order to take her with them and get her married. The level of their harassment reached to such a stage that Rajani , though not wished to , had to file a petition in Rohini Court at Delhi on 4th February, 2011 under Domestic Violence Act 2005. She requested the court for orders to provide her protection and safety. She had to extend her request with the court to restrain her parents from pressuring her to take her back home.

वक्त गुज़रते-2 रजनी के माता-पिता ने अपनी बेटी की दृढ़ता और सच्चाई पर अडिग रहने के स्वभाव के सामने हार मानी और उसे आध्यात्मिक विद्यालय में निश्चिंत रूप से रहने की अनुमति दे दी। अत: कोर्ट केस विदड्रा किया गया। अब आखिर धर्मयुद्ध की इस लड़ाई में भी सच्चाई की विजय हुई और रजनी यादव आ.ई.वि.वि. परिवार के साथ रहकर आध्यात्मिक शिक्षिका के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान का पूरे भारत में आज भी प्रचार-प्रसार कर रही है।

And in course of time the parents of Rajani had to face defeat as to the firm and concrete decision to stand beside the Truth; they finally accepted her to continue her stay in the "AVV" and the case filed in the court was withdrawn. And at last the Truth has won its usual victory and Rajani with "AVV family" happily. Rajani now is with the "AVV family" engaging herself in spreading the spiritual knowledge all over India. The further episodes of Bhagawat Story to continue.

और आगे की प्रकरण...